परिशिष्ट

(क) आलोच्य तथा सहायक ग्रंथों की सूची :-

(i) डा० भगवती शरण मिश्र के उपन्यास और कहानी संग्रह

1- एहसासों की एक शाम (कहानी-संग्रह), राधा-कृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
2- चुकने का दर्द (कहानी-संग्रह), अयन प्रकाशन, दिल्ली
3- लक्ष्मण-रेखा (उपन्यास), वाणी प्रकाशन, दिल्ली
4- सूरज के आने तक (उपन्यास), राजपाल एण्ड संज, दिल्ली
5- एकला चलो रे (उपन्यास), राजपाल एण्ड संज, दिल्ली
6- पहला सूरज (उपन्यास), प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
7- पवनपुत्र (उपन्यास), राजपाल एण्ड संज, दिल्ली
8- प्रथम पुरुष (उपन्यास), प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
9- पुरुषोत्तम (उपन्यास), राजपाल एण्ड संज, दिल्ली
10- पीताम्बरा (उपन्यास), राजपाल एण्ड संज, दिल्ली
11- काके लागूं पांव (उपन्यास), राजपाल एण्ड संज, दिल्ली
12- गोविन्द गाथा (उपन्यास), राजपाल एण्ड संज, दिल्ली
13- देव कबीरा रोया (उपन्यास), राजपाल एण्ड संज, दिल्ली
14- शांतिदूत (उपन्यास), राजपाल एण्ड संज, दिल्ली
15- अथ मुख्य मंत्री कथा (उपन्यास), राजपाल एण्ड संज, दिल्ली

(ii) संदर्भ ग्रंथ

16- हिन्दी साहित्य कोश, भाग-1, ज्ञान मंडल लि०, बनारस
17- मानविकी पारिभाषिक कोश, साहित्य खंड, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

18- मानविकी पारिभाषिक कोश, दर्शन खंड, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

19- हिन्दी विश्व कोश, खण्ड 4 - नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी

20- हिन्दी साहित्य का इतिहास, रामचंद्र शुक्ल,

21- संस्कृति का दार्शनिक विवेचन :डा० देवराज - लखनऊ प्रकाशन ब्यूरो, सूचना विभाग, 1957

22- हिन्दी साहित्य का इतिहास : डा० नगेन्द्र - नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली

23- हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रंथावली, भाग-1 - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

24- भारतीय संस्कृति (प्रथम खंड), सं० प्रभाकर माचवे - भारतीय संस्कृति संसद, कलकत्ता, 1983

25- साहित्यालोचन : डा० श्याम सुंदर दास - इंडियन प्रेस, प्रयाग

26- संस्कृति के चार अध्याय : रामधारी सिंह दिनकर - उदयांचल प्रकाशन, इलाहाबाद

27- बोध और व्याख्या : डा० कामेश्वर शर्मा - नावेल्टी एण्ड कम्पनी, पटना

28- पाश्चात्य काव्य-शास्त्र : आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा

29- भारतीय संस्कृति कोश : लीलाधर शर्मा पर्वतीय, राजपाल एण्ड संज, दिल्ली

(iii) अन्य ग्रंथ

30- पहला सूरज : एक समग्र मूल्यांकन, सं० शिव नारायण - अयन प्रकाशन, दिल्ली

31- विचार और विश्लेषण : डा० नगेन्द्र

32- असामान्य मनोविज्ञान : डा० राजेश्वरी प्रसाद सिंहा एवं डा० बी०के०मिश्र, भारती भवन, पटना

33- आधुनिक हिन्दी कविता की प्रमुख प्रवृत्तियाँ : डा० नगेन्द्र
34- कामायनी : एक पुनर्विचार : गजानन माधव मुक्तिबोध
35- मन्नू भंडारी का कथा साहित्य : डा० गुलाब राड़े
36- कामायनी : जय शंकर प्रसाद
37- वाल्मीकि-रामायण : प्रथम खंड - महर्षि वाल्मीकि - गीताप्रेस, गोरखपुर
38- वाल्मीकि रामायण : द्वितीय खंड- " "
39- राम चरित मानस: तुलसीदास - गीता प्रेस, गोरखपुर
40- श्रीमद् भागवत् पुराण : वेद व्यास - गीता प्रेस, गोरखपुर
41- प्रयोग, प्रगति और परम्परा : डा० राम विलास राय
42- भारती हिन्दी : डा० महेश्वर वर्मा
43- चिंतामणि, भाग-1 : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
44- चिंतामणि, भाग-2 : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
45- रस-मीमांसा : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
46- साहित्य शास्त्र : डा० राम कुमार वर्मा
47- छायावाद का सौन्दर्य-शास्त्रीय अध्ययन : डा० कुमार विमल
48- काव्य बिम्ब : डा० नगेन्द्र
49- आधुनिक हिन्दी कविता में बिम्ब-विधान : डा०केदार नाथ सिंह
50- नया काव्य-शास्त्र : डा० महेश्वर वर्मा
51- कलम का जादूगर : रामवृक्ष बेनीपुरी : डा० दिवाकर
52- साहित्य का उद्देश्य : प्रेमचंद
53- नाटककार जगदीश चंद्र माथुर : गोविन्द चातक
54- आर्य जीवन दर्शन : मोहन लाल महतो वियोगी
55- हिन्दी निबंध माला : डा० श्याम सुंदर दास
56- आधुनिक साहित्य : आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी

57- लेखक और परिवेश : डा० पवनदेव कुमार

58- भारतीय संस्कृति के मूल तत्व : केदारनाथपुरी - मालवीय प्रकाशन, लखनऊ

59- सात गीत वर्ष : डा० धर्मवीर भारती

60- पवनपुत्र: एक सांस्कृतिक अध्ययन : डा० सुषमा चौधरी
[प्रकाशित शोध-प्रबंध], दर असल प्रकाशन, पटना

61- कहानी विविधा : डा० देवी शंकर अवस्थी - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

62- नई कहानी : संदर्भ और प्रकृति : सं० डा० देवी शंकर अवस्थी - राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

63- कहानी : रचना-प्रक्रिया और स्वरूप : बटरोही - अक्षर प्रकाशन, दिल्ली

64- सेलेक्टेड एसेज : टी० एस० इलियट

65- ऐतिहासिक उपन्यास : डा० सत्यपाल गुप्त

66- पहला सुरज : एक अध्ययन : डा० ग० श्रीनिवासन, (प्रकाशित शोध-प्रबंध) मद्रास विश्वविद्यालय, दक्षिण भारतीय हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास

67- सुकवि समीक्षा : डा० आनंद नारायण शर्मा - भारती भवन, पटना

68- वैशाली की नगर-वधू : आचार्य चतुर सेन शास्त्री

69- झाँसी की रानी : लक्ष्मीबाई : वृंदावन लाल वर्मा

70- मृगनयनी : वृंदावन लाल वर्मा

71- मानस का हंस : अमृत लाल नागर

72- ऐतिहासिक उपन्यासकार : वृंदावन लाल वर्मा : डा० राम दरश मिश्र

73- ऐतिहासिक उपन्यास और उपन्यासकार : डा० गोपी नाथ तिवारी

74- आधुनिक कथा साहित्य : श्री गंगा प्रसाद पांडेय

75- उपन्यासकार शिव सागर मिश्र : डा० जानकी प्रसाद शर्मा

76- हिन्दी उपन्यास : शिव नारायण श्रीवास्तव

77- हिन्दी उपन्यास में चरित्र चित्रण का विकास : रणधीर राणा

78- हिन्दी साहित्य : उद्भव और विकास - डा० हजारी प्र० द्विवेदी

79- मानव मूल्य और साहित्य : डा० धर्मवीर भारती

80- शोध-सारावली : डा० विनोद चंद्र सिंहा

81- मार्क्सवाद और प्रगतिशील साहित्य : डा० राम विलास शर्मा

82- हिन्दी उपन्यास कोश : डा० भोला नाथ तिवारी

83- स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य : डा० बेचन

84- हिन्दी कहानी की रचना-प्रक्रिया : परमानंद श्रीवास्तव

85- समकालीन हिन्दी उपन्यास : विवेकी राय

86- स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास और बिहार का योगदान : शिवाराम शरण प्रसाद

87- हिन्दी उपन्यास कला : डा० प्रताप नारायण टंडन

§ II § अप्रकाशित शोध-प्रबंध

88- डा० भगवती शरण मिश्र : व्यक्तित्व और कृतित्व - डा० कुमार सिंह, निर्देशक - डा० राम बेलावन राय, पटना विश्वविद्यालय

89- डा० भगवती शरण मिश्र की साहित्य सर्जना के विविध आयाम: कुमारी राधा रानी भटनागर, आगरा विश्वविद्यालय, आगरा, निर्देशक - डा० राम स्वरूप त्रिपाठी, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, आगरा कॉलेज, आगरा

§ I § पत्र-पत्रिकाएँ

90- सारिका - टाइम्स ऑफ इंडिया प्रकाशन, अप्रैल 1989

91- भागीरथी - मासिक, पूर्णिया, जन. + फरवरी 1994 §डा० भगवती शरण मिश्र साधना अंक§

92- "स्वतंत्रमत", दैनिक, जबलपुर, 8 जुलाई, 1996

93- "अमृत वर्षा", दैनिक, पटना, 31 मई, 1994

94- "ओजस्वीन", पटना ब्यूरो, पाक्षिक, 1-15 फरवरी, 1996

95- "डोजबीन", पटना ब्यूरो, पाक्षिक, 1-15 मार्च, 1996
96- "हिन्दुस्तान" - दैनिक, पटना, 21 जून, 1996
97- "प्राच्य प्रभा", मासिक, पटना, सितम्बर, 1995
98- राष्ट्रभाषा संदेश, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रभाग, 31 जुलाई 1998
99- शाकुन, नई दिल्ली
100- संभवा, अनुपम प्रकाशन, मुजफ्फरपुर
101- उद्भावना, वार्षिकांक, 1995, नई दिल्ली
102- मैसूर हिन्दी प्रचार परिषद् पत्रिका, मैसूर, जनवरी, 1998
103- "कादम्बिनी", मासिक, अक्टूबर, 1997, हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन, दिल्ली
104- "हंस", अर्द्ध-शताब्दी विशेषांक : अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली
105- "कादम्बिनी", दिसम्बर, 1999 - हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन, दिल्ली
106- "आजकल" मासिक, मार्च, 1996 - प्रकाशन विभाग, दिल्ली
107- "वागर्थ", मासिक, जून 1998 - भारतीय भाषा परिषद, कलकत्ता
108- "इंडिया टुडे", साहित्य वार्षिकी : 1994-95
109- "भाषा", नव.-दिसम्बर 1992, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, दिल्ली
110- "नया साहित्य", जनवरी 2000 ई0, राजपाल एण्ड संज, दिल्ली
111- "नया आलोचक" - सं0 डा0 महेन्द्र मधुकर, अप्रील-जून 1999

(ख) डा0 मिश्र की प्रमुख रचनाएँ :-

पुस्तक का नाम	प्रकाशन संस्था	प्रकाशन वर्ष
कहानी संग्रह -		
1- तैरता हुआ ताज	- राज प्रकाशन, पटना -	1965 ई0
2- सोनार धारा -	राज प्रकाशन, पटना-	1967 ई0
3- एकतारों की एक शाम-राधा-कृष्ण प्रकाशन,	नई दिल्ली	1971 ई0

4- शापित लोग - किताब घर, दिल्ली - 1980 ई0
5- राह के पत्थर - पूर्वोदय प्रकाशन, नई दिल्ली- 1982 ई0
6- ऊँचाइयों का ईश्वर- पराग प्रकाशन, दिल्ली - 1982 ई0
7- जिलाधीश की वापसी- कला प्रकाशन, दिल्ली - 1983 ई0
8- चुकने का दर्द - अयन प्रकाशन, दिल्ली - 1995 ई0
9- नौ समकालीन कहानियाँ - पराग प्रकाशन, दिल्ली
|पाठ्य पुस्तक, राँची विश्वविद्यालय हेतु|

समस्यामूलक कथा साहित्य:-

1- आम का आम गुठली का दाम - किताब घर, नई दिल्ली
|पर्यावरण एवं प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रित| कई संस्करण, नया संस्करण - 1992 ई0
2- लक्ष्मण रेखा|उपन्यास| - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
|पर्यावरण समस्या|
3- हमारे होनहार|कहानी-संग्रह| - किताब घर, नई दिल्ली
4- काला अक्षर|कहानी संग्रह| - राजपाल एण्ड संज, दिल्ली
|प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रित|
5- सूरज के आने तक|उपन्यास| - राजपाल एण्ड संज, दिल्ली
|वयस्क शिक्षा केन्द्रित|
6- बलिदान की बकरी - राजपाल एण्ड संज, दिल्ली
|नव साक्षरों के लिए|
7- नया सवेरा|नव साक्षरों के लिए| - राजपाल एण्ड संज, दिल्ली
8- वृक्ष का चिंतन|पर्यावरण समस्या| -

सामाजिक उपन्यास :-

1- एकला चलो रे - राजपाल एण्ड संज, दिल्ली - 1980 ई0
2- नदी नहीं मुड़ती - राजपाल एण्ड संज, दिल्ली -
3- एक और अहल्या - राजपाल एण्ड संज, दिल्ली -

ऐतिहासिक-पौराणिक उपन्यास :-

1- पहला सूरज - प्रभात प्रकाशन, दिल्ली -
2- पवनपुत्र - राजपाल एण्ड संज, दिल्ली- 1987 ई0
3- प्रथम पुरुष - प्रभात प्रकाशन, दिल्ली - 1990 ई0
4- पुरुषोत्तम - राजपाल एण्ड संज, दिल्ली- 1991 ई0
5- पीताम्बरा - राजपाल एण्ड संज, दिल्ली- 1993 ई0
6- काके लागूं पांव - राजपाल एण्ड संज, दिल्ली- 1995 ई0
7- गोविन्द गाथा - राजपाल एण्ड संज, दिल्ली- 1996 ई0
8- देख कबीरा रोया - राजपाल एण्ड संज, दिल्ली- 1997 ई0
9- शांतिदूत - राजपाल एण्ड संज, दिल्ली- 1998 ई0
10- अथ मुख्यमंत्री कथा - राजपाल एण्ड संज, दिल्ली- 1999 ई0
(सामाजिक-राजनीतिक)

बाल साहित्य :-

1- बाल सेना(बाल उपन्यास) - राजपाल एण्ड संज, दिल्ली - 1982 ई0
2- मूर्ख बंजारा(उपन्यास) - राजपाल एण्ड संज, दिल्ली -
3- बाल महाभारत - बिहार ग्रंथ कुटिर, पटना
4- बाल रामायण - बिहार ग्रंथ कुटिर, पटना
5- नागों के देश में - बिहार ग्रंथ कुटिर, पटना
6- चोरनी बंदरिया(कहानी संग्रह) - किताब घर, नई दिल्ली- 1986 ई0
7- ज्ञान भरी कहानियाँ - विद्या प्रकाशन, नई दिल्ली - 1988 ई0
8- प्रेरक कहानियाँ - विद्या प्रकाशन, नई दिल्ली - 1989 ई0
9- परियों के देश में - राजपाल एण्ड संज, दिल्ली
10- कांच के गुब्बे - वैशाली प्रकाशन, नई दिल्ली
11- धरती का सपना - प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली

12- हाथी का गुरु तितर - बाल भारती, लखनऊ

13- कुदाल पंडित - बाल भारती, लखनऊ

14- नाग नाचे झूम-झूम - बाल भारती, लखनऊ

15- रामानुज लक्ष्मण - ज्ञान प्रकाशन, पटना

16- आदर्श भाई लक्ष्मण - ज्ञान प्रकाशन, पटना

17- बाल सप्तशती - साहनी प्रकाशन, पटना

18- रामदूत हनुमान - कुणाल प्रकाशन, पटना

कविता संग्रह :-

1- शीशे का शैतान - राज प्रकाशन, पटना

2- रंग इन्द्र धनुष के - बिहार ग्रंथ कुटिर, पटना

3- शिरडी के साईं {खण्ड काव्य} - कुणाल प्रकाशन, पटना

निबंध-संग्रह/आलोचना आदि:-

1- मि० मुखर्जी मजिस्ट्रेट बने - राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
{हास्य-व्यंग्य}

2- गंगा गंगा कितना पानी - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
{ललित निबंध}

3- यदा-यदा हि धर्मस्य - प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
{ललित निबंध}

4- मुझे शिकायत है - राज प्रकाशन, पटना
{ललित निबंध}

5- बिहार के तीर्थ, भाग-1 - राजपाल एण्ड संज, दिल्ली

6- बिहार के तीर्थ, भाग-2 - राजपाल एण्ड संज, दिल्ली

7- कवयो वदन्ति - बिहार ग्रंथ कुटिर, पटना

अंग्रेजी साहित्य :-

1- इन डिफेंस ऑफ ननसेंस - वैयक्तिक निबंध -रीगल बिल्डिंग, नई दिल्ली

2- दी गीता ऑल रीडिल्स रिजाल्व्ड -विजन बुक्स प्रा०लि०, नई दिल्ली

§ग§ §।§ शांतिदूत

"शांतिदूत" डा० भगवती शरण मिश्र का 1998 ई० में प्रकाशित एक नया उपन्यास है । इसमें विश्वपुरुष महात्मा गांधी का जीवन चरित आद्यन्त चित्रित है । गांधी जी के अफ्रीका प्रवास से लेकर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उनके अभूतपूर्व योगदान और अंततः स्वतंत्रता की बलिवेदी पर उनके अमर बलिदान की कथा सम्पूर्ण लेखकीय कुशलता के साथ रोचक कथात्मक शैली में वर्णित है ।

यद्यपि गांधी जी के विशाल व्यक्तित्व की तुलना में उपन्यास का कलेवर अत्यन्त छोटा है । मात्र 195 पृष्ठों में ही उनके सम्पूर्ण जीवन चरित्र को समेटा गया है, फिर भी, व्यापक फलक पर फैले हुए गांधी के जीवन की प्रायः सभी महत्त्वपूर्ण घटनाएँ इसमें आ गई हैं ।

उपन्यास रूप में प्रस्तुत यह रचना वस्तुतः इतिहास ही है। इसकी घटनाएँ भी सत्य है और तिथियाँ भी । केवल शैली उपन्यास की है। लेखक के ही शब्दों में — "..... गांधी के सदृश विश्वस्तरीय व्यक्तित्व को लेकर रचित इस उपन्यास में मैंने किसी काल्पनिक घटना अथवा चरित्र का समावेश करना अपराध माना है । प्रस्तुतीकरण की शैली ही औपन्यासिक है, शेष सबकुछ वही है, जो गांधी के व्यक्तित्व अथवा कृतित्व में उपलब्ध है ।"[1]

कथा का आरंभ अफ्रीका-प्रवास के दौरान रेल में गांधी जी के साथ हुए अपमानजनक व्यवहार से होता है । पास में प्रथम श्रेणी का टिकट रहने पर भी एक गोरा अफसर उन्हें धक्के देकर मेरित्स्बर्ग स्टेशन पर उतार देता है । गांधी जी स्टेशन मास्टर के सामने धरना देकर बैठ जाते हैं ।मजबूर

1- "शांतिदूत", भूमिका : डा० भगवती शरण मिश्र, पृष्ठ - 5

होकर ग्रीक स्टीवान मास्टर को उन्हें दूसरे ट्रेन से प्रथम श्रेणी में भेजने की व्यवस्था करनी पड़ती है । इस प्रकार अहिंसा और सत्याग्रह का उनका प्रथम प्रयोग सफल होता है ।

इसके बाद पूर्वदीप्ति (फ्लैश-बैक) में कथा पीछे लौटती है । परिच्छेद 2 से लेकर 12 तक मोहनदास कर्मचन्द्र गांधी के जन्म, पारिवारिक वातावरण, शिक्षा-दीक्षा, उनका दब्बूपन एवं संकोची स्वभाव, पोरबंदर और राजकोट की राजनीतिक-सामाजिक परिस्थितियाँ, पिता का स्वाभिमानी स्वभाव, ग्रीक अफसर को अपमानित करने के कारण उनका जेल जाना, माता की धर्म परायणता, गांधी के बालमन पर श्रवण कुमार और सत्य हरिश्चन्द्र की कथा का प्रभाव पड़ना, कुसंग में पड़कर मांस-भक्षण, सिगरेट पीना और पैसे चुराना और फिर तेरह वर्ष की बाल्यावस्था में बालिका कस्तूरबा से विवाह आदि घटनाएँ वर्णित हैं ।

बालक गांधी अपनी बुरी आदतों के लिए पश्चाताप करते हैं और पत्र लिखकर रोग शय्या पर पड़े पिता से क्षमा याचना करते हैं । उपन्यास का यह अंश बड़ा मर्मस्पर्शी बन पड़ा है । 1887 ई० में औसत दर्जे के छात्र गांधी किसी प्रकार मैट्रिक तो पास कर जाते हैं, किन्तु पिता की मृत्यु हो जाने से उनकी आगे की पढ़ाई लड़खड़ाने लगती है । एक साधारण कॉलेज में उनका नामांकन होता है । इसी बीच श्री मावजी दवे की प्रेरणा से गांधी बैरिस्ट्री पढ़ने विलायत जाते हैं । जाने से पूर्व उन्हें माता पुतलीबाई के समक्ष वहाँ जाकर मांसाहार, मदीरा और परस्त्री से दूर रहने की प्रतिज्ञा लेनी पड़ती है ।

अपनी कमजोर अंग्रेजी के कारण लंदन के कानून महाविद्यालय "इनर टेम्पल" में गांधी जी को प्रो० लेली से फटकार सुननी पड़ती है । फलतः

वे वहाँ फिर से मैट्रिक की पढ़ाई करके अपनी अंग्रेजी सुधारते हैं । वहीं वे गीता का अंग्रेजी अनुवाद पढ़ते हैं । एनी बेसेंट से उनका परिचय होता है और थियोसोफिकल सोसायटी की संस्थापिका मैडम ब्लेवत्स्की से भेंट भी । उनकी लिखी पुस्तक "की टू द थियोसोफी" तथा "लेटर्स ऑन क्रिश्चन" पढ़ते हैं। वे "बाइबिल" और बुद्ध को भी पढ़ते हैं । इन सबके अध्ययन से उन्हें ज्ञात होता है कि सभी धर्मों का मूल उपदेश प्रायः एक ही है । "कार्लाइल" की पुस्तक "हीरो एण्ड हीरो वर्शिप" पढ़कर वे मुहम्मद साहब की महानता से परिचित होते हैं । वे पेरिस भी जाते हैं और अंततः 10 जून 1891 ई० को बैरिस्ट्री की डिग्री मिलने पर स्वदेश लौट आते हैं ।

उनके विलायत प्रवास के दौरान ही माता पुतलीबाई मर चुकी होती है । बड़े भाई ही अब उनके लिए सबकुछ होते हैं । बड़े भाई की कोशिश से उन्हें बम्बई में ममीबाई का एक केस मिलता है । किन्तु अनाड़ी गांधी जज के सामने बोल नहीं पाते, और अपने मुव्वकील की फीस वापस कर देते हैं । फिर वे राजकोट आते हैं और स्कूल में मास्टरी के लिए प्रयास करते हैं । किन्तु योग्यता आड़े आती है और यहाँ भी उन्हें नौकरी नहीं मिलती ।

इस बीच एक संयोग घटित होता है । दक्षिण अफ्रीका में कार्यरत पोरबंदर की एक बड़ी व्यापारिक संस्था "मेसर्स दादा अब्दुल्ला फर्म" अदालती विवाद में फँसी होती है । उसके प्रतिनिधि को कानूनी सहायतार्थ एक गुजराती भाषाभाषी वकील की आवश्यकता होती है । इस काम के लिए गांधी जी चुने जाते हैं । गांधी चल पड़ते हैं अफ्रीका की ओर । यहाँ आकर कहानी पुनः वहीं लौटती है, जहाँ से चली थी ।

दक्षिण अफ्रीका में पग-पग पर मिले अपमान ने गांधी को इतना ठोस और मजबूत बना दिया कि वे कठिन से कठिन परिस्थितियों से

लड़ सकते थे । वहाँ उन्होंने हिन्दुस्तानियों को संगठित किया । भारतीयों की एक समिति बनायी गई और गांधी जी उसके प्रतिनिधि के रूप में प्रिटोरिया के ब्रिटिश अधिकारी से मिलते रहे । रेल विभाग की धांधली के विरुद्ध गांधी ने आवाज उठायी । रेलवे ने मान लिया कि शिक्षित और साफ-सुथरे भारतीयों को प्रथम श्रेणी में यात्रा करने दिया जायेगा । दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों पर अत्याचार की कोई सीमा न थी । मगर गांधी को एक वर्ष के लिए ही लाया गया था । उन्होंने दोनों पार्टियों में समझौता करवाकर मुकदमा समाप्त करवा दिया था । अब उन्हें भारत लौटना था । किन्तु विदाई समारोह में ही खबर मिली कि नेटाल के भारतीयों को मताधिकार से वंचित किया जा रहा है । हिन्दुस्तानियों के अनुरोध पर गांधी जी एक महीने के लिए रुक गये और ब्रिटिश एसेम्बली के अध्यक्ष को उन्होंने तार देकर बिल पर बहस रोकने का अनुरोध किया । बहस तो दो दिनों के लिए रुक गयी, परन्तु बाद में बिल पास हो गया । गांधी निराश नहीं हुए । उन्होंने प्रधानमंत्री लार्ड रिपन को 10 हजार भारतीयों के हस्ताक्षर से इसके विरुद्ध एक आवेदन भेजा । आवेदन की हजारों-हजार प्रतियाँ मुद्रित कर विलायत सहित कुछ अन्य देशों में भी भेजी गई । लंदन और हिन्दुस्तान के अखबारों ने इस पर खबरें और लेख भी छापे । अंततः लार्ड रिपन को यह बिल रद्द कर देना पड़ा । इस जीत से गांधी जी को अंतर्राष्ट्रीय ख्याति मिली ।

नेटाल में गांधी ने "नेटाल इंडियन कांग्रेस" की स्थापना की । उन्हें काफी चंदे और सहयोग मिले । अब अफ्रीकी भारतीयों के अनुरोध पर गांधी जी को वहीं रहना था । परिवार लाना जरूरी था । अतः गांधी जी छः महीने के लिए भारत आये । यहाँ उन्होंने अपनी प्रसिद्ध "ग्रीन बुक" निकाली और पूरे देश के नेताओं और बुद्धिजीवियों से सम्पर्क

किया । फिर लौट कर जब वे अफ्रीका गये तो ब्रिटिश विरोधी कार्यों के लिए गोरों ने उनका जबर्दस्त विरोध किया । उनके जहाज को हफ्तों घेर कर रखा गया । किन्तु गांधी के सत्याग्रह के सामने किसी की न चली। वहीं से उन्होंने भारत के 1897 और 1899 ई० के भीषण अकालों के लिए चंदे इकट्ठे कर पैसे भेजे, फिर वहाँ का कार्य सम्पन्न कर 1901 ई० में भारत चले आये । विदाई के समय मिले सात सौ रुपये के उपहार को गांधी ने भारतीयों की सहायता के लिए वहीं ट्रस्ट बनाकर जमा कर दिया। गांधी अफ्रीका के सर्वमान्य नेता बन चुके थे ।

19 दिसम्बर 1901 ई० को गांधी जब भारत पहुँचे तो कलकत्ते में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का सत्रहवाँ अधिवेशन चल रहा था । बाल गंगाधर तिलक और गोपाल कृष्ण गोखले की मदद से उन्होंने अधिवेशन में अफ्रीका सम्बन्धी एक प्रस्ताव रखा, जो पारित हो गया । गांधी वहाँ से रंगून भी गये । वर्मा पर गोरों की दमनात्मक कार्यवाई से गांधी को दुख हुआ । राजकोट में वकालत शुरू करने से पहले गांधी ने रेल की तीसरी श्रेणी में लगभग पूरे देश की यात्रा कर लोगों का दुख-दर्द जाना । वे बम्बई में वकालत कर जम ही रहे थे कि अचानक दक्षिण अफ्रीका से तार आया और गांधी को डरबन जाना पड़ा ।

वहाँ भारतीयों पर फिर संकट घिर आये थे । चेम्बर लेन टैक्स की मोटी रकम वसूल रहे थे । गांधी जी ने जोहांसबर्ग में फिर वकालत शुरू की और समस्या का समाधान ढूंढ़ा । इसी बीच वहाँ प्लेग का भयंकर प्रकोप हुआ और इसके निवारण हेतु गांधी जी ने सघन अभियान छेड़ा । रोगियों की दैहिक सेवा से लेकर सरकारी सहायता तक उन्होंने जुटकर नेतृत्व किया और प्लेग से निजात दिलाई । गांधी पर रस्किन की पुस्तक "अन टु द लास्ट" का प्रभाव बना रहा । उन्होंने "फिनिक्स" आश्रम की स्थापना की और एक अखबार निकाला "इंडियन ओपिनियन" ।

ट्रांसवाल में भारतीयों के प्रवेश को रोकने के लिए एक काला कानून बनाया जा रहा था, जिसके अनुसार भारतीयों, अरबों, और तुर्कों को निबंधन कराना और दसों उँगलियों के निशान देना अनिवार्य था। गांधी ने पत्र और प्रतिनिधि के माध्यम से इस कानून का बड़ा विरोध किया। कानून तो पास हो गया, किन्तु औरतों पर लागू नहीं हुआ। हड़ताल और सत्याग्रह करवाने के जुर्म में गांधी को द० अफ्रीकी सरकार ने कई बार जेल की सजा दी। इस पर इंग्लैण्ड, भारत और अन्य देशों में भी विरोध प्रदर्शन हुए।

लंदन में गांधी द्वारा दिये गये देशभक्तिपूर्ण भाषणों की विन्टन चर्चिल ने प्रशंसा की। गांधी टॉल्सटाय से अत्यन्त प्रभावित थे। उनसे पत्राचार भी करते थे। भारतीयों के पुनरुद्धार और बच्चों की शिक्षा के लिए उन्होंने टॉल्सटाय आश्रम खोला। गांधी के अडिग सत्याग्रह से स्मट्स और गांधी के बीच 1914 में एक समझौता हुआ, जिसमें भारतीयों की प्रायः सभी मांगें मान ली गईं।

बीस वर्षों के अफ्रीकी प्रवास के पश्चात् 18 जुलाई 1914 ई० को 45 वर्ष की अवस्था में गांधी भारत के लिए चल पड़े। पहले वे लंदन गये। भारत आने पर उन्होंने पहले सत्याग्रह द्वारा काठियावाड़ में धुंगी की प्रथा खत्म करायी। इसी बीच गोखले की मृत्यु हो गयी। 1917 ई० में गिरमिटिया प्रथा खत्म करायी। इसी वर्ष राज कुमार शुक्ल के बुलावा पर वे चम्पारण गये। वहाँ नील हों द्वारा किसानों पर हो रहे अत्याचार के विरुद्ध सत्याग्रह छेड़ा, जो स्वतंत्रता संग्राम के सबल आंदोलन की पृष्ठभूमि बना।

चम्पारण जाने के क्रम में वे राज कुमार शुक्ल के साथ पटना आये। वहाँ मौलाना मजहरुल हक से मिले और उनकी मदद से मुजफ्फरपुर आये।

मुजफ्फरपुर में प्रो० कृपलानी ने उनका स्वागत किया । यहाँ के जाने-माने वकील राम नवमी बाबू के नेतृत्व में उन्होंने वकीलों का एक जत्था तैयार किया। वे गया बाबू के यहाँ ठहरे । यहीं तार पाकर डा० राजेन्द्र प्रसाद और ब्रज किशोर बाबू आये । मोतिहारी जाने से पूर्व उन्होंने नील कारखाने के मालिक-संघ के महामंत्री और मुजफ्फरपुर कमिश्नर से मिलना चाहा । मंत्री ने तो मिलने से इनकार कर दिया । किन्तु कमिश्नर ने गांधी को बुलाया और उन्हें धमकाते हुए कमिश्नरी छोड़ देने का आदेश दिया । गांधी जी इसकी परवाह किये बिना स्वयंसेवकों के साथ मोतिहारी चल पड़े ।

वहाँ उन्होंने घूम-घूमकर किसानों की दुर्दशा देखी । वे गोरख बाबू के यहाँ टिके । बाद में एक आश्रम खोला और बच्चों की शिक्षा समाज सेवा तथा सफाई आदि के लिए उन्होंने कस्तूरबा को तथा बम्बई एवं गुजरात से शिक्षक, वकील एवं डॉक्टरों को बुलाया । एक ही साथ गांधी जी का ग्राम सुधार और किसानों दुर्दशा का जाँच-कार्य चल पड़ा । वहाँ के प्रशासक ने गांधी जी के कार्यों से घबड़ाकर उन्हें चम्पारण छोड़ने का आदेश दिया । गांधी ने मजिस्ट्रेट के सामने खुद बयान देकर उन्होंने स्पष्ट कह दिया "मेरा काम नीलहों के अत्याचारों की जाँच करनी है । इसे पूरा किये बिना मैं लौट नहीं सकता । इसके लिए मुझे जो भी दंड दिया जायेगा मैं सहर्ष स्वीकार करूँगा ।""वायसराय और मदन मोहन मालवीय को भी उन्होंने इस आशय का तार दिया । फलतः पेशी के पूर्व ही वायसराय के आदेश से मुकदमा वापस ले लिया गया । गांधी जी की सहमति से गवर्नर ने एक जाँच समिति गठित कर दी, जिसमें गांधी के अतिरिक्त सरकार, नीलहों और जमींदारों के एक-एक प्रतिनिधि शामिल थे । समिति की अनुकूल अनुशंसा के आलोक में नीलहों के विरोध के बावजूद भी सरकार ने नीलहों की ढुर-प्रथा बंद कर दी ।

इसके बाद गांधी ने सत्याग्रह द्वारा गुजरात के खेड़ा में मालगुजारी माफ करायी तथा अनसूईया बहन के अनुरोध पर मजदूर-हड़ताल द्वारा मिल मालिकों के अत्याचार को रोका । फिर "होमरूल" की मांग पर गवर्नर द्वारा लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के अपमान तथा "रौलेक्ट-एक्ट" का विरोध करके राजगोपालाचारी के परामर्श से गांधी ने देशव्यापी हड़ताल की घोषणा कर दी । हड़ताल ने जहाँ-तहाँ हिंसक रूप धारण कर लिया । प्रतिक्रिया में अंग्रेजी सरकार ने अत्याचार और बढ़ा दिये । पंजाब में दो दिनों की हड़ताल से वहाँ का लेफ्टीनेंट गवर्नर "डायर" अत्यन्त क्रोधित हुआ और 13 अप्रैल 1919 ई० को वैशाखी के दिन जालियांवाला बाग में शांतिपूर्ण सभा पर अंधाधुंध गोलियाँ चलवा दी । सैकड़ों निहत्थे नागरिक मारे गये । गांधी के प्रतिवेदन के आधार पर "डायर" पर मुकदमा चला और उसे नौकरी से बर्खास्त कर दिया गया। अमृतसर अधिवेशन में पारित प्रस्ताव के अनुसार गांधी जी ने कांग्रेस का एक संविधान तैयार किया । समाज सेवा एवं स्वावलम्बन के लिए अपने हाथ से कपड़ा बुनना, चर्खा करघा चलाना आदि पर जोर दिया ।

कतिपय मतभेदों के बावजूद देशबंधु चित्तरंजन दास, मोती लाल नेहरू, मदन मोहन मालवीय, बाल गंगाधर तिलक, मो० अली जिन्ना साथ-साथ काम करते रहे । 1920 ई० में कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन में स्वराज प्राप्ति के लिए असहयोग आंदोलन का प्रस्ताव पास हुआ ।

"वंदे मातरम" राष्ट्रगीत एवं तिरंगा कांग्रेस का झंडा बना । साबरमती आश्रम से गांधी जी का राष्ट्रीय आंदोलन और समाज-सुधार कार्यक्रम जोरों पर जारी था । गांधी के संपादन में "यंग इंडिया" और "नवजीवन" अखबार देशव्यापी प्रचार कर रहे थे । व्रत, संकल्प, सत्य और अहिंसा के इस पुजारी ने दलित और अछूतों के उद्धार के कार्यक्रम भी

चलाये । असहयोग आंदोलन में देशवासियों ने बढ़चढ़कर भाग लिया । स्वदेशी कपड़ों की होली जलायी गई । पूरे देश में वकील, शिक्षक, छात्र और कर्मचारियों ने अपने-अपने कार्यों का बहिष्कार किया । मोती लाल नेहरू की पत्नी स्वरूपा रानी, सरोजिनी नायडू, दादा भाई नौरोजी की कुमारी पौत्रियां, कस्तूरबा गांधी आदि के नेतृत्व में हजारों महिलाएँ भी आंदोलन में उतर पड़ीं । देशबंधु चितरंजन दास ने अपनी सारी सम्पत्ति और मकान देश-हित में अर्पित कर दिये । डा० राजेन्द्र प्रसाद, पंडित जवाहर लाल नेहरू, विट्ठलभाई पटेल, वल्लभभाई पटेल, लाला लाजपत राय, गंगाधर देशपांडिय, शंकर राव आदि ने अपनी भरी-पूरी वकालत और नौकरी छोड़ दी । इस आंदोलन को कुचलने के लिए अंग्रेजी सरकार ने लगभग 30 हजार लोगों को जेल में बंद कर दिया । "चौराचौरी" कांड की हिंसा के बाद गांधी जी ने आंदोलन वापस ले लिया । किन्तु अंग्रेजों का दमन बंद नहीं हुआ ।

10 मार्च 1922 ई० को गांधी को गिरफ्तार कर लिया गया । उन पर देशद्रोह का मुकदमा चला । गांधी ने स्वराज के लिए अपने आंदोलन को उचित बताते हुए निर्भीकतापूर्वक अपना अपराध स्वीकार कर जज का भी मुंह बंद कर दिया । किन्तु इसके लिए उन्हें छः वर्षों की सजा हो गई । गांधी बुझी-बुझी यरवदा जेल चले गये । किन्तु दो वर्षों के भीतर ही वे बुरी तरह बीमार पड़ गये । सरकार ने घबड़ाकर उन्हें 5 जनवरी 1924 ई० को बिना शर्त रिहा कर दिया । पूना में स्वास्थ्य-लाभ के पश्चात् गांधी फिर सक्रिय हुए । इसी बीच 1926 ई० में देशबंधु चितरंजन दास का निधन हो गया । गांधी को गहरा धक्का लगा । विश्व-प्रसिद्ध दार्शनिक, विचारक और गांधी जी के जीवनी लेखक "रोमा रोलां" से जान-सुनकर इंग्लैण्ड के एक बड़े अधिकारी की पुत्री मेडलिन गांधी जी की सेवा में आयी। त्याग, समर्पण और सेवा की साधिका मेडलिन "मीरा बहन" बनकर यहीं रह गयी ।

इसके बाद 1935 ई० का गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट, गांधी इरविन समझौता, 1942 ई० का भारत छोड़ो आंदोलन, बंगाल का अकाल, बिहार का भूकम्प, हिन्दू-मुस्लिम दंगे और अंत में 1947 ई० में स्वतंत्रता प्राप्ति, एक के बाद एक आंदोलन और सत्यों की सफलता पार करते रहे गांधी । अंत में स्वराज प्राप्ति के बाद साम्प्रदायिक सवाल पर 30 जनवरी 1948 ई० को एक सिरफिरे नौजवान नाथुराम गोडसे की तीन गोलियां खाकर स्वतंत्रता का यह अथक यात्री, विश्व का यह शांतिदूत सदा के लिए सो गया ।

इस प्रकार इतने व्यापक कथानक को उपन्यास में सम्पूर्ण लेखकीय कुशलता के साथ संक्षिप्त ढंग से समेटा गया है । घटनाक्रम एवं ऐतिहासिक स्मृतियों को इस सघनता के साथ समाहित किया गया है कि गांधी का सम्पूर्ण जीवन और दर्शन एक बुलंद इमारत की तरह व्याख्यित हो जाता है । भाषा अत्यन्त सरल एवं प्रवाहपूर्ण है । शैली वर्णनात्मक है । उपन्यास में कहानीपन की रोचकता, उत्सुकता, चरित्र-चित्रण, वातावरण सभी का प्रभावपूर्ण समायोजन है ।

(iii) अथ मुख्यमंत्री कथा

"अथ मुख्यमंत्री कथा" डा० मिश्र का स्वः प्रकाशित नवीनतम उपन्यास है । भारतीय राजनीति में राजनेताओं के अन्तर्गत आचरण और राजनैतिक-सामाजिक अन्तर्विचार पर लिखा गया यह उपन्यास नया नहीं है। भारतीय भाषाओं में इस विषय पर अनेक उपन्यास लिखे गये हैं । फिर भी

डा० मिश्र का यह उपन्यास इस विषय पर नये सिरे से विचार करता है और इसलिए पठनीय है ।

भारतीय राजनीति के स्वयंभू सूत्रधारों के चारित्रिक पतन ने जैसे-जैसे समूची राजनीति को भ्रष्ट किया है, वैसे-वैसे न केवल हिन्दी, वरन् भारतीय भाषाओं में उन्हें केन्द्र-बिन्दु बनाकर अनेक सशक्त उपन्यास लिखे गये । ..... किसी मुख्यमंत्री को लेकर लिखा गया हिन्दी में सर्वप्रथम उपन्यास दाण्डेय सेन का था । .... हिन्दी में राज दरबारी, "सचिवालय" इसी तरह के उपन्यास थे । श्री राजेन्द्र अवस्थी का "भंगी दरवाजा" भी एक शक्ति सम्पन्न राजनेता की कहानी कहता है ।"[1]

विगत दो-तीन दशकों में भारतीय समाज विशेषकर राजनीति में घोटाले और भ्रष्टाचार इतने वर्णित और सामान्य हो गये हैं कि अब जन-मानस पर कोई खास प्रतिक्रिया उत्पन्न नहीं करते । भ्रष्टाचार सार्वजनिक जीवन के अंग से हो गये हैं । अतः एक बेहद जाने-माने विषय पर लिखना "पिष्टपेषण" जैसा ही लगता है । लेकिन श्री मिश्र ने एक घिसे-पिटे विषय पर पठनीय ही नहीं, विचारोत्तेजक कृति की रचना की है, उसके लिए वे बधाई के पात्र हैं ।

"अथ मुख्यमंत्री कथा" समसामयिक भ्रष्ट राजनीति का फोटोग्राफ चित्रण या रिपोर्ताज मात्र नहीं है । उसमें अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए मंडल कमीशन के दुरुपयोग के कारण उत्पन्न सामाजिक विघटन और जातीय-विद्वेष तथा इसके घातक परिणामों का प्रबुद्ध विश्लेषण है ।"[2]

उपन्यास की कथा बिहार की राजनीतिक पृष्ठभूमि पर आधारित है । उपन्यास का अंत समाज और राजनीति के घटनाक्रमों की एक सुखद भविष्य-वाणी से होता है । जातीय विद्वेष की राजनीति पर सत्ता का महल खड़े करने वाले मुख्यमंत्री की, अपने ही रचे कुचक्र के कारण करारी हार होती है । "चुनाव रुकवाने, चुनाव परिणाम घोषित न होने देने की उसकी तमाम चालें

1- "कादम्बिनी", दिसम्बर, 1999

2- वही

कानून-प्रिय अधिकारियों की दृढ़ता के आगे नाकाम होती है और सिर थामें मुख्य मंत्री सोचता है --"कौशाली चली गई, राज्य भी जाकर रहेगा ।"[3]

इस प्रकार उपन्यास की कथा देश की सम-सामयिक राजनीति पर आधारित है । किन्तु प्रत्यक्षतः स्थान और व्यक्ति का नाम न लेने पर भी अप्रत्यक्ष रूप से यह उपन्यास बिहार की राजनीति पर केन्द्रित नजर आता है । वैसे कई राज्यों एवं केन्द्र की राजनीति भ्रष्टाचार भी इससे उजागर होते हैं । सामयिक राजनीतिक भ्रष्टाचार को विषय बनाकर लिखा गया डा० मिश्र का यह पहला उपन्यास है ।

--00--

3- "कादम्बिनी", दिसम्बर, 1999